WEEKLY FOCUS
#60, MAR 2022

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

कृषि अवलोकन

उत्पादन–केंद्रित से किसान–केंद्रित की ओर

परिचय

भारत कृषि क्षेत्र में एक वैश्विक महाशक्ति है। यह विश्व में अन्य खाद्य फसलों के साथ गेहूं, चावल, कपास, दूध, दालों और मसालों के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। विश्व में मवेशियों की सर्वाधिक संख्या (भैंस) भी भारत में ही है। इसके बावजूद, इस क्षेत्रक के संरक्षक, अर्थात किसान मुश्किल से ही अपना गुजारा कर पाते हैं और उन्हें सामाजिक–आर्थिक असुरक्षा से लेकर दीर्घकालिक ऋणग्रस्तता तक कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

इस बात को समझने के लिए कि यह विरोधाभास क्यों मौजूद है, भारतीय कृषि के महत्व और इसके विकास को समझना आवश्यक है। इसके क्षेत्रक के भीतर क्या–क्या शामिल है? यह क्षेत्रक कैसे विकसित हुआ और समग्र आँकड़े किन प्रवृत्तियों को दर्शाते हैं? इसके सामने कौन–सी चुनौतियाँ हैं? और इन चुनौतियों से निपटने तथा इस क्षेत्रक को किसान केंद्रित बनाने के लिए क्या किया जा सकता है?

इस दस्तावेज के पीछे निहित विचार कृषि क्षेत्रक की व्यापक तस्वीर को प्रदर्शित करना है। कृषि के उप–क्षेत्रको के बारे में अधिक विस्तार से जानकारी प्रदान करने के लिए दस्तावेजों की एक श्रृंखला जारी की जाएगी।

कृषि श्रृंखला

इस कृषि श्रृंखला का उद्देश्य आगत, उत्पादन, सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय व्यवहार्यता से लेकर विस्तार और ढांचागत सेवाओं तक कृषि के सभी क्षेत्रकों की जानकारी प्रदान करना है। इन्हें दस्तावेजों की एक श्रृंखला में कवर किया जाएगा। इन दस्तावेजों की सहायता से हम कृषि चक्र के सभी क्षेत्रकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

कृषि का विकास क्यों महत्वपूर्ण है?

- **आर्थिक संवृद्धि का चालकः** कृषि का आधुनिकीकरण श्रम उत्पादकता को बढ़ाकर, पूंजी संचित करने हेतु कृषि अधिशेष में वृद्धि करके और निर्यात के माध्यम से विदेशी मुद्रा में वृद्धि करके औद्योगीकरण के लिए परिस्थितियां तैयार करता है।

- **खाद्य और पोषण सुरक्षाः** कृषि का विकास खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित कर सकता है और जनसंख्या के लिए बेहतर पोषण प्रदान करके मानव पूंजी में सुधार करता है।

निर्धनता का उन्मूलन: किसानों की आय में वृद्धि करने के अतिरिक्त कृषि का विकास कृषि क्षेत्रक के बाहर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करके निर्धनता को कम करने में योगदान दे सकता है। इसके परिणामस्वरुप बड़ी संख्या में रोजगार सृजन होता है और संवृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

- साक्ष्य दर्शाते हैं कि कृषि क्षेत्रक, अर्थव्यवस्था के शेष क्षेत्रकों की तुलना में कम से कम दोगुनी दर से ग्रामीण निर्धनता को कम कर रहा है।

समावेशी विकास के लिए ग्रामीण रूपांतरण को सक्षम बनाना: कृषि में विकास का आसपास के क्षेत्रों पर अन्य कारकों के साथ-साथ उच्च क्रय शक्ति, अवसंरचनाओं के विकास और उच्च शिक्षा प्राप्ति के रूप में सहायक प्रभाव पड़ता है। यह रूपांतरण एक लाभदायक चक्र का निर्माण करता है जिसमें मानव पूंजी में अधिक निवेश से ग्रामीण परिदृश्य में और अधिक रूपांतरण होता है और दीर्घावधि में समावेशी विकास प्राप्त होता है।

कृषि एक व्यवसाय से बढ़कर है: विश्व भर के समुदायों में और विशेष रूप से भारत में कृषि केवल एक व्यवसाय नहीं है बल्कि संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा है। विभिन्न त्योहार, लोक साहित्य का एक बड़ा हिस्सा आदि कृषि गतिविधियों के आस-पास सृजित किए गए हैं।

भारतीय कृषि में क्या-क्या सम्मिलित हैं?

फसलें (61.31%)
- **रोपण कृषि, उद्यान कृषि (हॉर्टिकल्चर) एवं अन्य फसलें**
  - औषधि एवं स्वापक पदार्थ
  - मसाले
  - अन्य फसलें
  - उप-उत्पाद
- **खेतों में उगाई जाने वाली फसलें**
  - अनाज
  - दालें
  - तिलहन
  - चुकंदर और गन्ना (Sugars)
  - रेशे वाली फसलें (कपास, जूट आदि)

पशुधन (26.8%)
- दुधारू पशु
- मांस के लिए पाले जाने वाले पशु
- कुक्कुट
- ऊन एवं बाल के लिए पाले जाने वाले पशु
- रेशम कीट एवं मधुमक्खी पालन
- पशुधन संवर्द्धन

मत्स्यन (4.5%)
- अंतर्देशीय मत्स्यन
- समुद्री मत्स्यन

वानिकी (7.39%)
- औद्योगिक लकड़ी
- जलाऊ लकड़ी
- गैर-इमारती वनोपज

वार्तालाप!
कृषि 'जीवन जीने का एक तरीका' है

विनय: अरे विनी। मैंने सुना है कि आप पिछले सप्ताह एक फार्म स्टे (Farmstay) गए थे। वह क्या होता है?

विनी: हाय विनय। फार्म स्टे एक फार्म होता है जो पेईंग गेस्ट (भुगतान करने वाले मेहमानों) को ठहरने की सुविधा प्रदान करता है। ये आपको कृषि गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से देखने और अनुभव करने का अवसर प्रदान करते हैं।

विनय: यह बहुत अच्छा विचार है। आपको किस तरह की गतिविधियों का अनुभव हुआ?

विनी : मैंने सुबह–सुबह पशुओं के चरने से लेकर शाम के समय खेतों की देखरेख करने तक उन सभी गतिविधियों का अनुभव किया जो उनकी नियमित दिनचर्या का भाग होती हैं।

विनयः यह तो बहुत आनंददायक रहा होगा। किंतु मेरा एक प्रश्न है। खेती के कार्यों में सुबह से लेकर शाम तक पूरे दिन का समय लग जाता होगा, तब उन्हें आराम करने, मनोरंजन करने या लोगों से मिलने–जुलने का समय कब मिलता है?

विनीः हाँ विनय, उन्हें वास्तव में बहुत अधिक खाली समय नहीं मिलता है। किंतु हमारी जीवन शैली के विपरीत जहां व्यक्तिगत, पेशेवर और सामाजिक जीवन अलग–अलग हैं, किसानों के लिए ये सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

विनय : कैसे?

विनीः मैं अत्यंत भाग्यशाली थी कि मैंने पोंगल उत्सव के प्रथम दो दिनों को देखा जो कि फसल की कटाई से संबंधित त्यौहार है। यह त्योहार बुवाई और कटाई के कृषि चक्र पर निर्भर है, इसमें लोक गीत, नृत्य, नाटक आदि शामिल हैं। यही गांवों में सामाजिक जीवन है।

विनयः आपके कहने का तात्पर्य यह है कि किसानों की जीवन शैली, उनका सामाजिक जुड़ाव और उनका व्यक्तिगत जीवन सभी उनके कृषि कार्यों के आस–पास ही केंद्रित होते हैं।

विनीः हां! इसके अतिरिक्त, उनके उपभोग प्रतिरूप का एक बड़ा भाग, उनके रहने के स्थान और उनके द्वारा की जाने वाली मनोरंजक गतिविधियां, ये सभी उन फसलों के प्रकारों पर निर्भर होते हैं जो वे उगाते हैं।

विनयः खेतों में इतने लंबे समय तक कार्य करने के पश्चात शायद ही कोई व्यक्ति मनोरंजक गतिविधियों में शामिल होता होगा।

विनीः आपको जानकर हैरानी होगी कि लगभग प्रत्येक व्यक्ति कार्य के पश्चात किसी न किसी तरह की मनोरंजक गतिविधि में शामिल होता है। किसानों की कार्यात्मक तंदुरुस्ती (फिटनेस) बहुत अधिक होती है। वे इस स्तर का शारीरिक श्रम प्रत्येक दिन और सप्ताह में सातों दिन करते हैं।

विनयः बहुत बढ़िया। आपका अनुभव बताता है कि कृषि अपने आप में एक अलग दुनिया है।

विनीः मैं सहमत हूँ। कृषि केवल एक पेशा नहीं है, यह जीवन जीने का एक तरीका है।

भारतीय कृषि का क्रमिक विकास

भारत में **कृषि का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता के युग** से आरंभ होता है और दक्षिण भारत के कुछ भागों में इससे पहले के भी साक्ष्य मिले हैं। इससे देश में एक समृद्ध, जीवंत और विविधतापूर्ण कृषि संस्कृति का विकास हुआ है।

स्वतंत्रता के पश्चात **खाद्य पदार्थों की कमी और जनसंख्या की निरंतर वृद्धि** को देखते हुए, कृषि के लिए विकास रणनीति काफी हद तक **उत्पादन केंद्रित** रही है। इस क्षेत्रक को प्रोत्साहन दिया गया जिसने राष्ट्र को अपनी खाद्य सुरक्षा के लिए उच्च स्तर का उत्पादन प्राप्त करने में सहायता की है।

आत्मनिर्भरता के इस प्रयास से निम्नलिखित विकास हुए–

- **प्रथम दो पंचवर्षीय योजनाएं (1951–61) और खाद्य संकट:** इसका प्रारंभिक ध्यान भारत द्वारा सामना किए जा रहे खाद्य संकट का समाधान करने और कृषि संबंधी अति आवश्यक कच्चे माल की उपलब्धता को सुनिश्चित करने, विशेष रूप से कच्चे कपास और कच्चे जूट की गंभीर कमी को दूर करने पर था।
  - खाद्य संकट का समाधान प्रस्तुत करने के लिए मैत्रा समिति (1950), मेहता समिति (1957), वेंकटप्पैया समिति (1966) सहित विभिन्न समितियां बनाई गईं।
- **संरचनात्मक परिवर्तनों का दशक:** 1960 के दशक के मध्य में कृषि क्षेत्रक को व्यापक और दीर्घकालिक रूप से प्रभावित करने वाली नीतियों को अपनाया गया। इन उपायों में उत्पादन सब्सिडी, न्यूनतम समर्थन मूल्य, सरकार द्वारा खरीद, भंडारण और खाद्यान्नों का वितरण, साथ ही व्यापार संरक्षण भी शामिल था।
  - यह वह समय भी था जब गेहूं की उच्च उपज देने वाली नई किस्मों और चावल की बौनी किस्मों (Dwarf Varieties) को उगाना आरंभ किया गया। इसके कारण उत्पादकता में हुई उल्लेखनीय वृद्धि **हरित क्रांति** (पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर केंद्रित) के रूप में जानी गई।
- **प्रथम बड़ी समीक्षा:** भारत ने देश में कृषि की प्रगति की समीक्षा करने और इसमें सुधार तथा इसके आधुनिकीकरण की अनुशंसाएं करने हेतु वर्ष **1970 में राष्ट्रीय कृषि आयोग की नियुक्ति** की।
  - इस आयोग ने वर्ष 1976 में अपनी अंतिम रिपोर्ट जारी की। यह कृषि को एक व्यापक शब्दावली के रूप में संदर्भित करती है, जिसमें फसल उत्पादन के साथ भूमि और जल प्रबंधन, पशुपालन, मत्स्य पालन और वानिकी भी शामिल है।
- **क्रमिक विकास (1970 और 1980 के दशक):** देश में सिंचित क्षेत्रों का विस्तार किया गया, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक उपयोग को बढ़ावा दिया गया और कृषि के लिए संस्थागत ऋण तक पहुंच में सुधार किया गया। इससे कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिससे भारत राष्ट्रीय स्तर पर खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गया।
  - क्रमिक विकास ने **द्वितीय हरित क्रांति** (देश के पूर्वी और मध्य भाग पर केंद्रित), श्वेत क्रांति (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) द्वारा शुरू की गई) और नीली क्रांति (मत्स्य पालन) आदि की शुरुआत के लिए उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण किया गया। इन क्रांतियों ने विकास की गति को और तीव्र कर दिया।
- **वर्ष 1991 के सुधार और कृषि निर्यात:** 1991 के पश्चात कृषि उत्पादों, विशेषकर फलों और सब्जियों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- **उत्पादन का आय में रूपांतरण नहीं होना:** उत्पादन के स्तर में वृद्धि हो रही थी किन्तु कृषि संवृद्धि दर और किसानों की आय में ऐसा नहीं देखा जा रहा था। इसके आलोक में, किसानों के लिए तीव्र और अधिक समावेशी विकास के तरीकों का सुझाव देने के लिए वर्ष 2004 में प्रोफेसर एम, एस, स्वामीनाथन की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय किसान आयोग का गठन किया गया।
  - इस आयोग द्वारा भूमि सुधार, मृदा परीक्षण, जल उपलब्धता, कृषि उत्पादकता, ऋण एवं बीमा में वृद्धि करने, खाद्य सुरक्षा और किसानों की प्रतिस्पर्धात्मकता को शामिल करते हुए व्यापक अनुशंसाएं की गईं।
- **किसानों की आय दोगुनी करना:** किसानों की संवृद्धि के विचार का अनुसरण करते हुए, किसानों की आय को दोगुना करने हेतु कृषि सुधारों का सुझाव देने के लिए अशोक दलवई की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया।

इन घटनाओं ने वर्तमान कृषि पारितंत्र का निर्माण किया और इस क्षेत्र में प्रचलित हाल के रुझानों को आकार दिया।

कृषि क्षेत्रक में वर्तमान रुझान क्या हैं?

कृषि – एक वृहद क्षेत्रक

कृषि क्षेत्रक निस्संदेह भारत में सबसे बड़ा आजीविका प्रदाता है जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

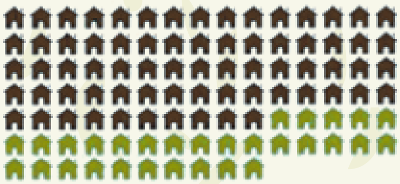

70%
ग्रामीण परिवार अभी भी मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर हैं।

7%
विश्व के कृषि उत्पादन में भारत का योगदान है।

भारत का कृषि निर्यात विश्व के कृषि व्यापार का 2.2% है।

82%
किसान छोटे और सीमांत हैं।

लेकिन समस्या यह है कि भारत के कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा (45%) GDP में केवल 18% का योगदान देता है, जो GVA (2021-2022) का 18.8% है।

- **कृषि विकास:** कृषि का समग्र विकास फसल क्षेत्रक के अनुरूप होता है। यह फसल क्षेत्रक विभिन्न उप–क्षेत्रों में साल–दर–साल होने वाले उतार–चढ़ाव से निर्धारित होता है। पशुधन क्षेत्रक में उल्लेखनीय एवं टिकाऊ दर से वृद्धि हो रही है और यह सभी उप–क्षेत्रों में सबसे आगे है।
  - **पशुधन क्षेत्रक के कृषि क्षेत्रक के विकास के इंजन के रूप में उभरने की संभावना है** और इसे, अन्य उप–क्षेत्रकों से सबसे खराब परिणामों की स्थिति में, जोखिम को एवं किसानों के नुकसान को कम करने वाला माना जा सकता है।
- **विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल:** फसल प्रतिरूप में 1/3 से अधिक हिस्सेदारी अभी भी चावल और गेहूं की बनी हुई है।
  - पिछले चार दशकों के दौरान पोषक–अनाज की भागीदारी में काफी कमी आई है।
  - फलों एवं सब्जियों के क्षेत्रफल में समय के साथ वृद्धि हुई है जो उच्च मूल्य वाली फसलों की मांग और उत्पादन के उन्मुखीकरण का संकेत देता है।
- **मूल्य में विभिन्न फसलों का भाग:** क्षेत्रफल में वृद्धि, तकनीकी प्रगति एवं बढ़ती कीमतों के बावजूद धान और गेहूं की हिस्सेदारी में समय के साथ कमी आई है।
  - फलों और सब्जियों की मूल्य भागीदारी में इनके क्षेत्रफल में उल्लेखनीय विस्तार, उत्पादकता में सुधार और साथ ही कीमतों में वृद्धि (अत्यधिक अस्थिर होने के बावजूद) के कारण काफी वृद्धि हुई है।

क्षेत्रफल, आयतन और मूल्य पिरामिड

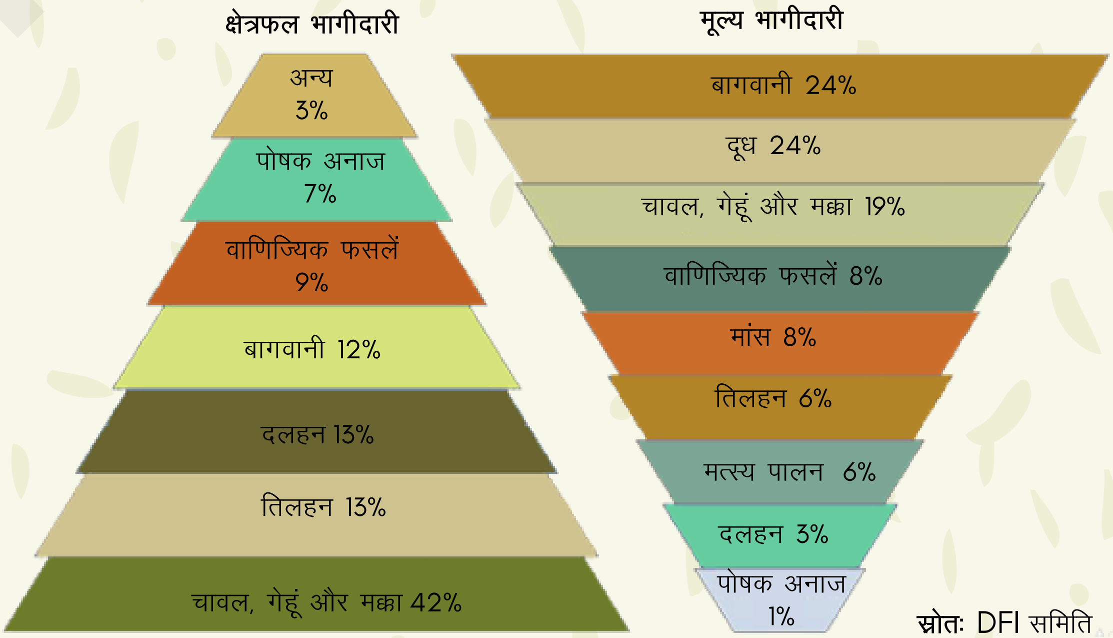

स्रोत: DFI समिति

कृषि व्यापार: पिछले 25 वर्षों के दौरान कृषि निर्यात एवं आयात में भी अत्यधिक वृद्धि हुई है। हालांकि, वर्ष 2013–14 के बाद से भारत के निवल कृषि व्यापार में, मुख्यतः कृषि वस्तुओं के निर्यात में गिरावट के कारण, कमी आई है।

- विनिर्मित एवं अन्य मूल्यवर्धित उत्पादों के बढ़े हुए भाग के कारण पिछले 25 वर्षों के दौरान समग्र व्यापार में कृषि आयात और निर्यात दोनों की भागीदारी में काफी कमी आई है।

कृषि क्षेत्रक में निर्यात और आयात के रुझान

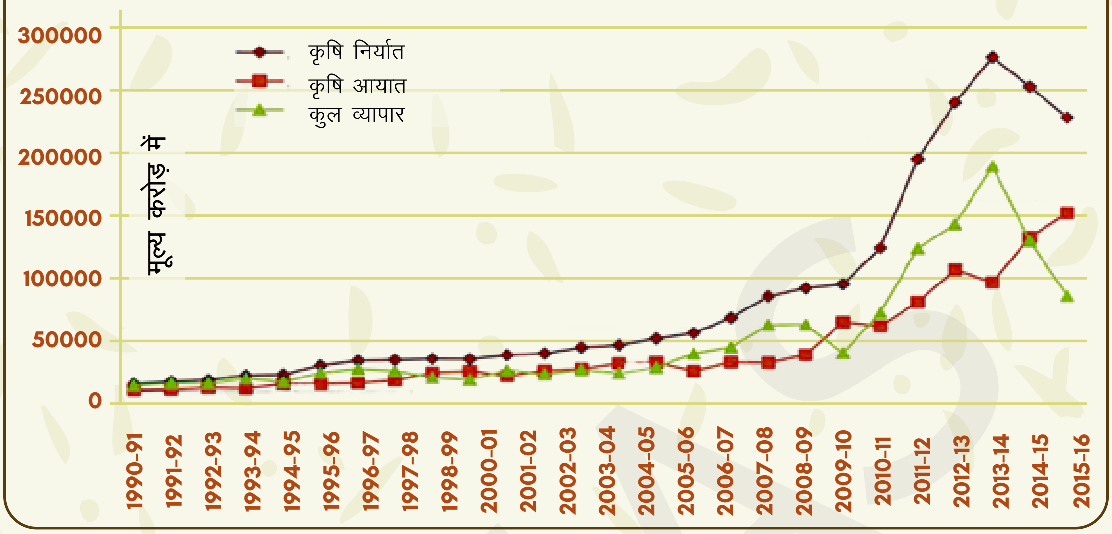

कृषि में निवेश: सार्वजनिक निवेश पिछले कुछ वर्षों से 2.3% के बीच स्थिर रहा है, जबकि निजी निवेश में उतार–चढ़ाव आता रहा है।

खेतों का आकार: वर्ष 1995–96 और वर्ष 2010–11 के बीच **खेतों का औसत आकार 1.41 हेक्टेयर से घटकर 1.15 हेक्टेयर हो गया है।** वर्तमान में छोटे जोतदारों द्वारा 42% भूमि पर खेती की जा रही है और ये कुल कृषि जोत का 83% है।

कृषि व्यापार का राष्ट्रीय व्यापार में योगदान

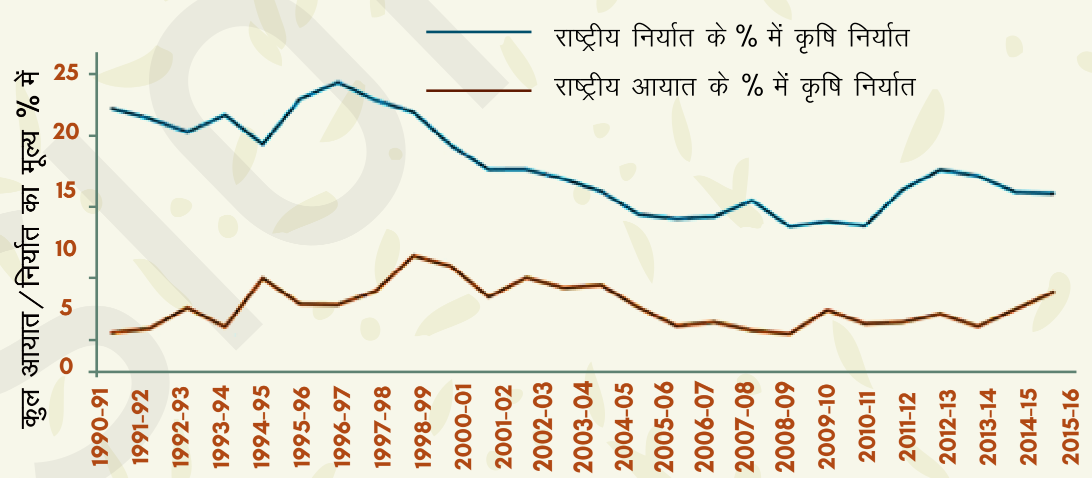

Source: DFI Committee

खपत व्यय में परिवर्तन: उपभोक्ताओं में गैर–खाद्य व्यय की ओर बढ़ती प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है और इस प्रवृत्ति के निकट भविष्य में जारी रहने की उम्मीद है।

- टिकाऊ वस्तुओं पर व्यय वर्ष 1993–94 से वर्ष 2011–12 के बीच दोगुने से अधिक हो गया है।

कृषि और संबद्ध क्षेत्रकों के GVA (2011–12 मूल कीमतों पर) के सापेक्ष कृषि और संबद्ध क्षेत्रकोण में GCF की प्रतिशत हिस्सेदारी

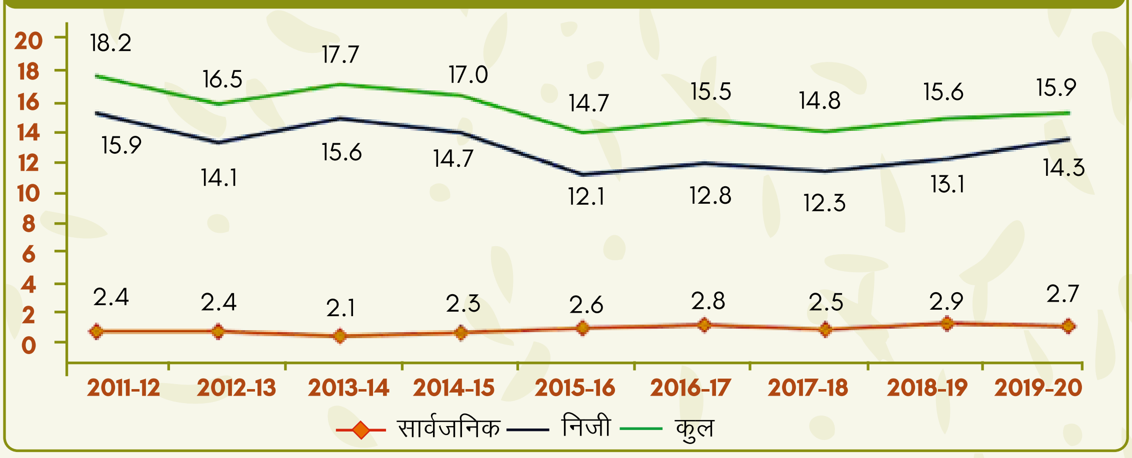

स्रोतः DAFW और कृषि सांख्यिकी के आंकड़ों पर एक नज़र, 2020 पर आधारित।

इस क्षेत्रक द्वारा प्राप्त की गई प्रमुख उपलब्धियां क्या हैं?

- **कृषि पर निर्भरता में कमी:** कृषि पर निर्भर जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 2011 में कम होकर 48% रह गया है जो वर्ष 1951 में 85% था।
  - वर्तमान रुझान देश में कुल श्रमिकों में से काश्तकारों और कृषि श्रमिकों की संख्या में **सामान्य कमी** की ओर भी संकेत करते हैं।
- **खाद्यान्न एवं अन्य कृषि उत्पादों का रिकॉर्ड उत्पादन:** खाद्यान्न के औसत उत्पादन में वृद्धि हुई है, विशेष रूप से पिछले दशक में उच्च कृषि ऋण, सार्वजनिक और निजी निवेश, गुणवत्ता युक्त बीजों तथा उर्वरकों के उपयोग में वृद्धि, सिंचित क्षेत्र के विस्तार और फसल गहनता में वृद्धि से इसमें सहायता मिली है।
  - राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन द्वारा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है।

भारत विश्व में विविध कृषि उत्पादों का प्रमुख उत्पादक है।

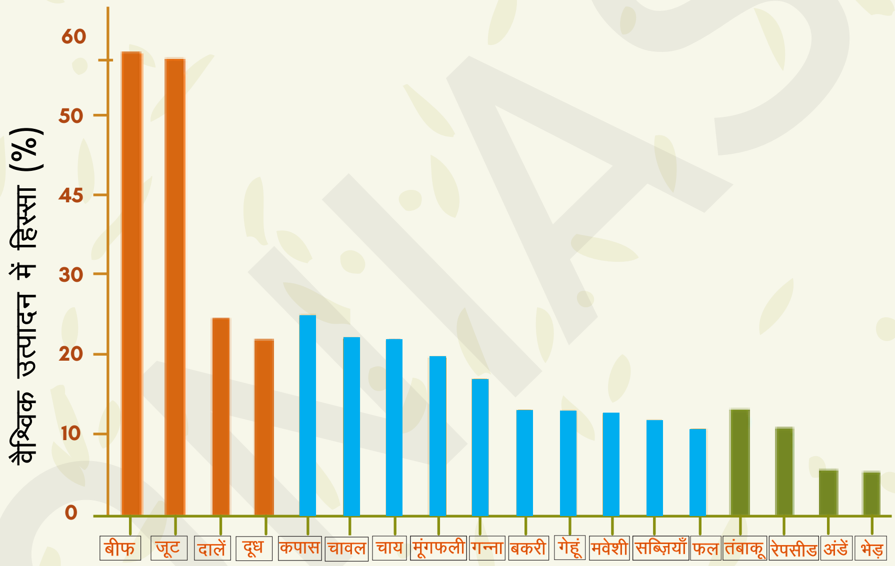

नोट: नारंगी, नीले और हरे स्तंभ विश्व में क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रैंक को दर्शाते हैं। (वर्ष 2018 के मूल्य पर)

- **बागवानी फसलों की ओर विविधीकरण:** वर्ष 2012–13 से बागवानी उत्पादन ने खाद्यान्न उत्पादन को पीछे छोड़ दिया है और वर्तमान में यह कृषि क्षेत्रक में फसल उत्पादन के कुल मूल्य का लगभग 35% है।

- **संबद्ध गतिविधियों का बढ़ता महत्व:** पिछले दशक में पशुपालन और मत्स्य पालन में तीव्र वृद्धि के कारण संबद्ध क्षेत्रकों के महत्व में लगातार वृद्धि हुई है। **इस प्रवृत्ति से किसानों की पूरक आय में वृद्धि हो सकती है।**

- **कृषि व्यापार की बदलती गतिशीलता:** चूंकि भारत विश्व में विभिन्न कृषि वस्तुओं के अग्रणी उत्पादक के रूप में उभरा है, अतः कृषि और संबद्ध क्षेत्र के उत्पादों के वैश्विक व्यापार में इसकी भागीदारी वर्ष 2000 में 1.1% से दोगुनी होकर वर्ष 2018 में 2.2% हो गई है।

- **कृषि–आगत उद्योग का विकास:** उर्वरक एवं कीटनाशक उद्योग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जिसे उत्पादन स्तरों में वृद्धि से देखा जा सकता है। इसके अलावा, स्वतंत्रता के बाद से कुल सिंचाई का स्तर 3 गुने से अधिक बढ़ गया है (हालांकि यह अभी भी विकसित देशों की तुलना में कम है)।

बीज एवं उर्वरकों की उपलब्धता से लेकर फसलों के उत्पादन तक कृषि क्षेत्रक के लगभग प्रत्येक मात्रात्मक पहलू में स्पष्ट वृद्धि देखी गई है। **लेकिन इस मात्रात्मक वृद्धि** ने किसानों के लिए बेहतर मानव विकास, ग्रामीण विकास या समावेशी विकास जैसे **गुणात्मक परिवर्तन** नहीं किए हैं।

कृषि क्षेत्र में विद्यमान चुनौतियां क्या हैं?

- **प्रकृति की अनिश्चितताओं पर अत्यधिक निर्भरता:** बाढ़ और सूखे का अनवरत चक्र, वर्षा की अप्रत्याशितता और वन्यजीवों या कीटों के आक्रमण का बारहमासी खतरा किसानों के लिए अनिश्चितता और उनकी लाचारी को बढ़ाता है।
  - जलवायु परिवर्तन के प्रभावों अर्थात मौसम की अनिश्चितता में वृद्धि, प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति में वृद्धि आदि के कारण समस्या अधिक गंभीर हो गई है।
- **निम्न उत्पादकता:** हालांकि उत्पादन का स्तर कई गुना बढ़ गया है, लेकिन उत्पादकता का स्तर वैश्विक औसत की तुलना में निम्न बना हुआ है। इसके लिए बीजों, कीटनाशकों और उर्वरकों की खराब गुणवत्ता, सिंचाई की कमी, किसानों के बीच ज्ञान की कमी, विधियों एवं नीतियों के उपयोग से संबंधित संरचनात्मक मुद्दे आदि अनेक कारण शामिल हैं।
- **निम्न–कृषि आय का निराशाजनक चक्र:** धीरे–धीरे खेती और जीवनयापन की बढ़ती लागत के साथ–साथ कम कीमत और कीमतों में होने वाले उतार–चढ़ाव के साथ मिलकर कृषि उद्यम का शुद्ध रिटर्न नकारात्मक है या केवल अस्तित्व को बचाए रखने के लिए पर्याप्त है। यह किसी भी तरह की बचत या निवेश की संभावना तथा इससे संबंधित दीर्घकालिक वृद्धि की संभावना को नकारता है।
  - इस निराशाजनक चक्र के परिणामस्वरूप किसानों की कठिनाइयां एवं चिंताएं बढ़ रही हैं। इस संकट की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष 1995 से वर्ष 2010 के मध्य आत्महत्या करने वाले किसानों की संख्या ढाई लाख से अधिक थी।
- **सीमित संस्थागत और ढांचागत समर्थन:** औपचारिक कृषि ऋण तक सीमित पहुंच, बाजार और सूचना तक सीमित पहुंच (विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए) और भंडारण एवं रसद पारितंत्र की नगण्य उपस्थिति किसानों को उनकी उपज के सही मूल्य की प्राप्ति में बाधा डालती है।
  - **संस्थागत स्तर पर खराब पोस्ट–प्रोडक्शन सिस्टम कृषि अपशिष्ट के मुद्दे को बढ़ा देते हैं। यह किसानों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है और खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न करता है।**
- **श्रम संबंधित मुद्दे और प्रवासन:** कुछ क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों की कमी और कुछ क्षेत्रों में प्रच्छन्न बेरोजगारी की दोहरी समस्या विद्यमान है।
  - कृषि की आर्थिक अव्यवहार्यता कई किसानों को शहरों में प्रवास करने हेतु अपनी जमीन छोड़ने या बेचने के लिए बाध्य करती है। यह स्थिति उत्पादक भूमि को कृषि पारितंत्र से दूर करती है।
- **खाद्य मुद्रास्फीति और खाद्य कीमतों में अस्थिरता:** खाद्य कीमतों में बड़े पैमाने पर उतार–चढ़ाव किसानों की प्रयोज्य आय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। साथ ही यह अप्रत्यक्ष रूप से कृषि क्षेत्र को अनिश्चित और निवेश के लिए अव्यवहारिक बनाता है। यह कृषि क्षेत्र में नए लोगों के प्रवेश को भी हतोत्साहित करता है।
  - उदाहरण के लिए, किसानों द्वारा टमाटर और प्याज से लदे ट्रैक्टरों को सड़कों पर डंप करने या दूध के कनस्तरों को नालियों में बहाने के दृश्य मूल्य परिवर्तनशीलता की सीमा को उजागर करते हैं।
- **व्यवसाय के रूप में कृषि की खराब छवि:** इन सभी मुद्दों की परिणति एक ऐसे परिदृश्य के रूप में होती है जहां कृषि को एक सम्मानजनक पेशा नहीं माना जाता है। अधिकांश किसान नहीं चाहते हैं कि उनकी आगामी पीढ़ी द्वारा कृषि की जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनमें से अधिकांश के लिए कृषि एक विकल्प नहीं रह गया है बल्कि यह न्यूनतम स्तर पर जीवन यापन का एक तरीका बन गया है।

कृषि कर: समताकारी बल या वित्तीय बोझ?

संविधान की 7वीं अनुसूची की प्रविष्टि 46 राज्यों को कृषि आय पर कर लगाने की शक्ति प्रदान करती है लेकिन किसी भी राज्य ने कृषि आय पर कराधान को प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया है। यद्यपि, कृषि को **आयकर अधिनियम की धारा 2(1A) के तहत आयकर से छूट प्रदान की गई है।** जो कृषि आय को "एक भूमि से प्राप्त लगान/राजस्व, इस भूमि से कृषि के माध्यम से प्राप्त आय और इस भूमि पर निर्मित इमारतों से प्राप्त आय के रूप में परिभाषित करता है"। कृषि आय को छूट प्रदान करने का उद्देश्य **लगातार व्याप्त कृषि संकट, इस क्षेत्र की अनौपचारिकता और कृषि उपज मूल्य में उतार–चढ़ाव** के आलोक में इस क्षेत्र की रक्षा करना है।

लेकिन हाल के दिनों में **बड़े पैमाने पर धनी किसानों ने** इन छूटों का लाभ उठाया है क्योंकि छोटे और मध्यम किसान टैक्स स्लैब के दायरे में शामिल नहीं हैं।

धनी किसानों पर कर लगाने से दोहरे लाभ हो सकते हैं– प्रथम, यह कृषि क्षेत्र हेतु अवसंरचना, विस्तार सेवाओं आदि के प्रावधान के लिए सरकार को जवाबदेह बनाएगा। द्वितीय, इससे प्राप्त राजस्व को सभी किसानों के लिए ग्रामीण अवसंरचना जैसे सामूहिक संसाधनों के निर्माण में लगाया जा सकता है। इस प्रकार, यह कृषि क्षेत्र के लिए एक समताकारी बल के रूप में कार्य करेगा।

भारत के कृषकों की स्थिति

कृषकों द्वारा सामना की जाने वाली सबसे मुख्य समस्याएं

बाढ़–सूखा	कम उपज	सिंचाई	कम आय	संस्थागत सहयोग	उत्पाद का कम मूल्य	श्रम संबंधी मुद्दे	मुद्रास्फीति	अर्थव्यवस्था की मंदी	अन्य
13%	11%	9%	8%	8%	8%	5%	5%	4%	29%

वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में कृषकों की संतुष्टि

	परिवार की आर्थिक स्थिति से संतुष्ट	परिवार की आर्थिक स्थिति से असंतुष्ट
उत्तर	59%	34%
पूर्व	35%	62%
मध्य	71%	24%
दक्षिण	48%	41%
पश्चिम	47%	36%

जीवन के प्रमुख उत्तरदायित्वों से संबंधित चिंताएं

	बहुत अधिक	कुछ हद तक	बिल्कुल भी नहीं
बच्चों की शिक्षा	60%	30%	30%
खेती	59%	33%	8%
रोजगार	58%	35%	8%
स्वास्थ्य	53%	39%	7%
परिवार में विवाह	47%	40%	14%
घर खरीदना	33%	39%	28%
ऋण चुकाना	31%	30%	39%

फसल खराब होने के कारण

सूखा	बाढ़	कीट हमला	अल्प/अधिक वर्षा	पशु–पक्षियों का हमला	सिंचाई सुविधा का कम होना	ओलावृष्टि	बेमौसमी वर्षा	अन्य
19%	19%	7%	22%	5%	6%	10%	7%	5%

कृषि हेतु विद्युत उपलब्धता का नहीं होना →

दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	मध्य	पूर्व
39%	40%	46%	42%	87%

भूमि को बेचने का कारण {0.%}

कारण	{0.%}
आर्थिक स्थिति का खराब होना	27
परिवार में विवाह हेतु धन की आवश्यकता	15
सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण का दबाव	9
पुत्र/पुत्री के व्यापार/शिक्षा के लिए	9
साहूकार को धन लौटने हेतु	7
अच्छा सौदा मिलने के कारण	7
चिकित्सा व्यय/उपचार हेतु	6
संपत्ति विवाद था और उसे बेचने का दबाव था	4
अन्य कारणों से	16

यदि आप शहर में नौकरी करते हैं तो क्या आप खेती छोड़ देंगे?

- **62%** शहर में अच्छी नौकरी के लिए खेती छोड़ने को तैयार हैं।
- **26%** शहर में अच्छी नौकरी के लिए खेती छोड़ने को तैयार नहीं हैं।
- **13%** कह नहीं सकते हैं।

किसान अपने बच्चों को शहर में क्यों बसाना चाहते हैं?

शिक्षा	बेहतर सुविधाएं	रोजगार	अन्य कारण
37%	28%	25%	10%

युवा खेती क्यों नहीं करना चाहते हैं? {0.%}

कारण	{0.%}
अन्य नौकरी या काम में दिलचस्पी का होना	36
बेहतर आय का स्रोत नहीं होना	22
मैं उच्च शिक्षित हूँ इसलिए यह काम मेरे लिए उपयुक्त नहीं है	8
जोखिम भरा पेशा/मानसिक तनाव	7
कृषि एक अत्यधिक पिछड़ा एवं अविकसित क्षेत्रक है	5
अन्य	6

किसान से संबंधित सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता (%में)

योजना	सुना है	लाभ लिया है
कर्जमाफी योजना	53	10
किसान क्रेडिट कार्ड	52	15
राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना	30	7
ग्रामीण बीज योजना/बीज ग्राम योजना	30	10
राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	28	7
राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन	23	4
कृषि विज्ञान केंद्र	23	5
ग्रामीण भंडारण योजना	19	5
कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी	13	2

Disclaimer: छात्र को समझने में सहायता हेतु ग्राफ और चार्ट प्रस्तुत किए जाते हैं, इन तथ्यों को याद रखना परीक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक नहीं है।

इन चुनौतियों के समाधान और कृषि को किसान केंद्रित बनाने के लिए क्या किया जा सकता है?

- **कृषक समुदाय के साथ जुड़ना:** संचार चैनलों की स्थापना और निर्माण जो दो तरफा प्रकृति के होने चाहिए। साथ ही इन्हें कृषक समुदाय के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। स्पष्ट और नियमित संचार से किसानों की सामूहिक अभिव्यक्ति के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा। यह कृषि नीति के निर्माण में अधिक प्रभावपूर्ण भागीदारी का साधन बन सकता है।
- **कृषि को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए सहायता प्रदान करना:** कृषि व्यवहार्यता किसान के लिए पर्याप्त मूल्य प्राप्ति के साथ–साथ उत्पादन की घटी हुई लागत पर निर्भर करती है।
  - तत्काल अवधि में इसे सुनिश्चित करने के लिए ऋण पारितंत्र को सशक्त बनाने से लेकर नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने तक– प्रत्येक स्तर पर किसानों को सहायता प्रदान करने की आवश्यकता होगी।
  - दीर्घावधि के लिए, ई–नाम जैसी संस्थागत प्रणालियों को सशक्त बनाकर और कृषि–विपणन अवसंरचना कोष जैसे प्रयासों के माध्यम से सहायक अवसंरचना का विकास करके बाजार पारितंत्र को विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
- **अदूरदर्शी दृष्टिकोण के स्थान पर समग्र दृष्टिकोण अपनाना:** कृषि–पारितंत्र के घटक जैसे अनुसंधान और विकास, बीज, मृदा, जल, उर्वरक और कीटनाशक, कृषि तकनीक आदि एक–दूसरे पर सह–निर्भर हैं। इस प्रकार का एक अंतर्संबंधित पारितंत्र एक समग्र दृष्टिकोण की गारंटी प्रदान करता है।
  - उदाहरण के लिए, इंडिया डिजिटल इकोसिस्टम ऑफ एग्रीकल्चर (IDEA) द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण कृषि आपूर्ति श्रृंखला, परिशुद्ध कृषि और उभरती प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करता है।
- **क्षमताओं एवं कमजोरियों की स्पष्ट समझ पर आधारित नीतियां:** कृषि नीतियों को प्राकृतिक घटकों जैसे कि कृषि–जलवायविक परिस्थितियों तथा सामाजिक–आर्थिक घटकों जैसे घरेलू एवं वैश्विक आबादी के उपभोग पैटर्न की समझ पर आधारित होना चाहिए।
- **अनुबंधन (linkages) एवं विस्तार सेवाओं का विकास करना:** कृषि अर्थव्यवस्था किसी भी अन्य पारितंत्र की भांति, एक लंबी आपूर्ति श्रृंखला पारितंत्र का भाग बनने की स्थिति में अपने मूल्य में वृद्धि करती है। इसे सुनिश्चित करने हेतु खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों के लिए बाजार का विकास आदि जैसे लिंकेज को प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा सकते हैं।
  - विस्तार सेवाओं का प्रसार तकनीकी विकास के माध्यम से संरचनात्मक परिवर्तनों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही यह सूचना प्रसार जैसी गतिविधियों के माध्यम से किसानों का समर्थन करने हेतु भी महत्वपूर्ण है।
- इस क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश बढ़ाने के साथ–साथ नाबार्ड, ICAR आदि जैसे कृषि संस्थानों को सशक्त बनाकर एवं स्थापना करके **संस्थागत और ढांचागत समर्थन प्रणाली** निर्मित करना चाहिए। यह इस क्षेत्र को सशक्त बनाने हेतु निजी क्षेत्र को आकर्षित करके इस क्षेत्र के लिए एक बुनियादी ढांचे के रूप में कार्य करेगा।
- **निर्यात पारितंत्र को सशक्त बनाना:** वृहद स्तर पर कृषि में संलग्न आबादी, उत्पादकता में सुधार की व्यापक गुंजाइश और विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने की क्षमता भारत को एक आदर्श कृषि–निर्यात उम्मीदवार के रूप में स्थापित करती है। इसके द्वारा कृषि–निर्यात नीति 2018 के लक्ष्यों को सक्रिय रूप से एवं अनवरत प्रयास करते हुए प्राप्त किया जा सकता है।
- **किसानों को कृषि उद्यमी बनाना:** कृषि क्षेत्र का दीर्घकालिक रूपांतरण किसानों के दृष्टिकोण में परिवर्तन से शुरू होता है। इस दृष्टिकोण को निर्वाह से लाभ में और उत्तरजीविता से नवाचार में परिवर्तित किए जाने की आवश्यकता है।
  - इस दृष्टिकोण को परिवर्तित करने के लिए सभी हितधारकों के प्रयासों की आवश्यकता होगी। सरकार द्वारा सामाजिक सुरक्षा के रूप में एक फॉल–बैक तंत्र स्थापित किए जाने की आवश्यकता है और इसके लिए प्रचलित कृषि–उद्यमियों को इस क्षेत्र में परिवर्तन लाने वाले रोल मॉडल के रूप में कार्य करना होगा।

कृषि निर्यात नीति, 2018

- **वर्ष 2022 तक कृषि निर्यात को दोगुना करके 60 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक करना
- किसानों को **विदेशी बाजार में निर्यात के अवसरों का लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाना**
- **नीति के कार्यान्वयन की निगरानी** हेतु मंत्रालयों, एजेंसियों और राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों को शामिल करना
- प्रजातीय, जैविक, पारंपरिक और गैर–पारंपरिक **कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देना**

निष्कर्ष

कृषि क्षेत्र प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पादक, आपूर्ति श्रृंखला और उपभोक्ताओं को प्रभावित करता है। इसलिए कृषि सुधार में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी शामिल है। यह विचार सरकार के नेतृत्व से लोगों के नेतृत्व में कृषि सुधार के बदलते दृष्टिकोण की व्याख्या करता है, जहां जागरूकता से लेकर सक्रिय भागीदारी तक प्रत्येक हितधारक का योगदान महत्वपूर्ण है।

'खाद्य सुरक्षा' को प्रस्तुत करने वाले 'कृषि' के अदूरदर्शी दृष्टिकोण को समाज–नीति–विज्ञान के समन्वय को विकसित करने की आवश्यकता है जहां नीति समाज की आवश्यकताओं और निर्णयों को वैज्ञानिक और पर्यावरणीय समझ के साथ संयोजित करने का कार्य करती है।

विषयः एक नजर में

कृषि अवलोकनः उत्पादन–केंद्रित से किसान–केंद्रित की ओर

कृषि में संवृद्धि का महत्व

- उत्पादकता, अधिशेष उत्पादन और विदेशी मुद्रा अर्जन के माध्यम से **आर्थिक संवृद्धि का प्रेरक।**
- **खाद्य और पोषण संबंधी सुरक्षा** के माध्यम से मानव पूंजी में सुधार।
- कृषि क्षेत्रक के बाहर आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहित करके **निर्धनता में कमी हेतु योगदान** देता है।
- समावेशी विकास के लिए **ग्रामीण रूपांतरण को सक्षम बनाता है।**
- यह **एक व्यवसाय से अधिक** है क्योंकि यह समाज और संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में कार्य करता है।

क्षेत्रक का विकास

- पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं में **खाद्य संकट को लक्षित किया गया।**
- **1960 के दशक** में बड़े **संरचनात्मक परिवर्तन किए गए।**
- वर्ष 1970 में राष्ट्रीय कृषि आयोग द्वारा **पहली प्रमुख समीक्षा।**
- **1970 और 1980 के दशक में क्रमिक वृद्धि दर्ज की गई।**
- **1991 के सुधारों** के कारण **कृषि निर्यात** में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
- **बढ़ते उत्पादन का किसानों की आय में रूपांतरण न होने** की अभिस्वीकृति।
- **किसानों की आय दोगुनी** करने पर अशोक दलवई समिति।

कृषि संबंधी क्षेत्रक में प्रवृत्तियां

- **कृषि संवृद्धि** की प्रकृति में उतार–चढ़ाव बना रहता है। पशुधन क्षेत्रक के संवृद्धि के इंजन के रूप में उभरने की संभावना है।
- **चावल और गेहूं की फसल प्रतिरूप में एक तिहाई (1/3) से अधिक क्षेत्रफल की हिस्सेदारी** है लेकिन मात्रा के संदर्भ में इतनी हिस्सेदारी नहीं है। **फलों और सब्जियों** की मात्रा संबंधी हिस्सेदारी **में निरंतर वृद्धि हो रही है।**
- पिछले 25 वर्षों के दौरान **कृषिगत व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई है।**
- **कृषि में सार्वजनिक निवेश** 2–3 प्रतिशत पर स्थिर रहा है लेकिन **निजी निवेश में उतार–चढ़ाव आया है।**
- वर्ष 1995–96 और वर्ष 2010–11 के बीच **औसत भू–जोत आकार 1.41 हेक्टेयर से घटकर 1.15 हेक्टेयर हो गया है।**
- **गैर–खाद्य व्यय की ओर बढ़ती प्रवृत्ति** प्रदर्शित हुई है और यह प्रवृत्ति भविष्य में भी जारी रहने की उम्मीद है।

मील का पत्थर

- **कृषि पर निर्भरता** वर्ष 1951 में 85% से घटकर वर्ष 2011 में 48% हो गई।
- **खाद्यान्न और अन्य कृषि उत्पादों का रिकॉर्ड उत्पादन।**
- **बागवानी फसलों की ओर विविधीकरण** (कुल फसल मूल्य का लगभग 35%)।
- **संबद्ध गतिविधियों का बढ़ता महत्व।**
- वैश्विक हिस्सेदारी में वृद्धि के साथ **कृषिगत व्यापार की परिवर्तित हो रही गतिशीलता।**
- कृषि आगत (इनपुट) उद्योग का विकास (स्वतंत्रता के बाद से कुल सिंचाई स्तर में 3 गुना से ज्यादा वृद्धि)।

कृषि क्षेत्रक के समक्ष विद्यमान चुनौतियां

- **प्रकृति की अनिश्चितताओं** जैसे सूखा, बाढ़, वर्षा की अप्रत्याशितता और वन्यजीवों के खतरों **पर अत्यधिक निर्भरता।**
- बीजों की खराब गुणवत्ता, कीटनाशकों, उर्वरकों, सिंचाई का अभाव और ज्ञान की कमी जैसे मुद्दों के कारण **निम्न उत्पादकता।**
- **निम्न–कृषि आय का निराशाजनक चक्र** अर्थात नगण्य निवल प्रतिफल के कारण नगण्य बचत और नगण्य निवेश।
- विशेष रूप से कमजोर वर्गों जैसे कि लघु एवं सीमांत किसानों के लिए **सीमित संस्थागत और अवसंरचनात्मक समर्थन।**
- **श्रमिक मुद्दों और प्रवास** के कारण कृषि संबंधी श्रमिकों की दुर्लभता और प्रच्छन्न बेरोजगारी की दोहरी समस्या।
- **खाद्य मुद्रास्फीति और खाद्य कीमतों में अस्थिरता** किसानों की प्रायोज्य आय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। साथ ही, अप्रत्यक्ष रूप से कृषि संबंधी क्षेत्रक को अनिश्चितता से युक्त क्षेत्र के रूप से अनुमानित करती है और इस प्रकार कृषि क्षेत्रक को निवेश के लिए अव्यवहार्य बनाती है।
- **एक व्यवसाय के रूप में खेती की छवि अच्छी नहीं है** क्योंकि इसे कम कुशल और अंतिम उपाय के पेशे के रूप में माना जाता है।

इन चुनौतियों का समाधान करने और कृषि को किसान केंद्रित बनाने की दिशा में आगे की राह

- संचार चैनलों को सुव्यवस्थित करके और कृषि संबंधी नीति–निर्माण में भागीदारी बढ़ाकर कृषक **समुदाय के साथ जुड़ना।**
- उत्पादन लागत को कम करके और किसानों के लिए मूल्य वसूली सुनिश्चित करके **कृषि को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने में सहायता** करना।
- **अदूरदर्शी दृष्टिकोण के स्थान पर समग्र दृष्टिकोण अपनाना** जिसमें कृषि–पारिस्थितिकी तंत्र के सभी तत्व शामिल हैं।
- **सामर्थ्य और कमजोरियों की स्पष्ट समझ के आधार पर नीतियां सृजित करना** जैसे कि कृषि–जलवायविक परिस्थितियां और उपभोग प्रतिरूप (पैटर्न)।
- मुख्य कृषि गतिविधि के लिए बाह्य सहायक ढांचा प्रदान करने हेतु **अनुबंधन और विस्तार सेवाओं का विकास करना।**
- इस क्षेत्रक में सार्वजनिक निवेश बढ़ाने के साथ–साथ कृषि संस्थानों के सुदृढ़ीकरण एवं निर्माण द्वारा **संस्थागत और अवसंरचनागत समर्थन प्रणाली सृजित करना।**
- कृषि–निर्यात नीति, 2018 के उद्देश्यों का पालन करते हुए **निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ बनाना।**
- कृषि–सुधार के रूप में कृषि उद्यमियों हेतु किसानों का स्नातक करना **उनके दृष्टिकोण के रूपांतरण से शुरू होता है।**